साम्य के प्रकार   date-17.04.20

Kinds of Equilibrium

(1) Stable Equilibrium (स्थायी संतुलन)
(2.) Unstable Equilibrium (अस्थायी संतुलन)
(3) Neutral " (तटस्थ संतुलन)

Dr. Rindeshwar Paswan
Assistant Professor
Dept. of Economics
M.L.S College, Sarisab-Pahi
(Madhubani)
Mobile No- 9973574631

उपर्युक्त विषय के सम्बन्धमें हमने तीनों प्रकारों का विश्लेषण आ चुका है। पुनः इस विषय के संदर्भ में विश्लेषण करने का कोशिश रहेगा। उपर्युक्त तीनों साम्यों अथवा संतुलन के बारे में हम यह कह सकते हैं कि (i) प्रथम प्रकार का संतुलन टूटने के बाद फिर से स्थापित होकर अपने पहले वाले स्थान पर ज्यों का त्यों बना रहता है। (ii) दूसरे प्रकार का संतुलन टूट जाने पर पहले संतुलन से दूर हटता रहता है और पुनः प्रारंभिक दशा में नहीं आता। (iii) अन्तिम संतुलन प्रारंभिक दशा से हटकर कहीं अन्य स्थान पर स्थायी हो जाता है।

उदाहरण स्वरूप :— संतुलन या साम्य की तीनों दशाओं को एक सूत्र में बाँधते हुए हम एक उदाहरण से और अधिक स्पष्ट व्याख्या किये जा सकते हैं। एक कटोरे के अन्दर स्थित गेंद स्थायी संतुलन या साम्य में होगी क्योंकि यदि गेंद को अपने स्थान से इधर-उधर हिला दिया जाये तो वह पुनः अपने स्थान को प्राप्त कर लेगी। प्रत्येक बार हिलाने पर भी वह उसी स्थान पर आ रुकेगी। इसके बाद विपरीत, यदि कटोरे को उलटा कर दिया जाये और उसकी तली पर गेंद रखा दें तो वह अस्थिर संतुलन की स्थिति में होगी क्योंकि यदि गेंद को जरा-सा भी हिला दिया जाये तो वह वहाँ से हटकर दूर चली जायेगी और अपने पुराने स्थान को प्राप्त करने की इसमें कोई प्रवृत्ति नहीं होगी। इसके अलावे संतुलन भूमि पर रखी गयी गेंद तटस्थ साम्य अथवा संतुलन की स्थिति में होती है क्योंकि हिला देने के उपरान्त गेंद अपने पुराने स्थान से हटकर नये स्थान पर आकर रुक जायेगी। अतः उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित चित्रों

P.T.O

के रूप में दर्शाया जा सकता है :—— इसमें स्थायी संतुलन एवं अस्थायी संतुलन तथा तटस्थ संतुलन को दिखाया (चित्ररेखा) के द्वारा जा रहा है ——

स्थायी साम्य (i) Stable Equilibrium, (ii) अस्थायी साम्य (Unstable Equilibrium) (iii) तटस्थ साम्य (Neutral Equilibrium)

2. अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन साम्य
(Short-term and Long-term Equilibrium)

इसके अन्तर्गत अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन साम्य के जन्मदाता मार्शल थे, क्योंकि वे ही प्रथम अर्थशास्त्री थे जिन्होंने कीमत निर्धारण में समय-तत्व (Time Element) के प्रभाव का अध्ययन किये थे। जिसमें अल्पकालीन साम्य वह है जिनमें माँग में परिवर्तन होने पर पूर्ति में परिवर्तन केवल वर्तमान साधनों की सहायता से ही किया जा सकता है क्योंकि अल्पकाल में समय इतना नहीं होता कि उत्पत्ति के नये साधनों को प्रयोग में लाया जा सके। इस प्रकार की परिस्थितियों में माँग और पूर्ति के बीच जो साम्य या सन्तुलन स्थापित होता है, उसे अल्पकालीन साम्य कहते हैं। इसके विपरीत, दीर्घकालीन साम्य वह स्थिति है, जिसमें माँग में परिवर्तन होने के फलस्वरूप पूर्ति में परिवर्तन उत्पत्ति के वर्तमान साधनों तथा उत्पत्ति के नये साधनों की सहायता से किया जा सकता है। इस प्रकार माँग और पूर्ति में जो नया साम्य स्थापित होता है, उसे दीर्घकालीन साम्य कहते हैं।

3. विशिष्ट (आंशिक) तथा सामान्य संतुलन (साम्य)
(particular and General Equilibrium) :→

प्रो० सैम्युलसन के शब्दों में, "विशिष्ट संतुलन की धारणा तो केवल एक ही चर (variable) पर लागू होती है, जबकि सामान्य संतुलन में हजारों चर (variable) सम्मिलित होते हैं।"1

"The concept of an Equilibrium System is applicable as well as to the case of a single variable as to the so called general equilibrium involving thousands of variable." — Samuelson.

Scanned with CamScanner